श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १

जून-/2022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. मंगलाचरण करने से कार्य ..... पूर्ण हो।
२. समकित की भाव से ..... करनी चाहिये।
३. मनुष्यों के रहने के स्थान वह ..... के नाम से पहचाने जाते है।
४. दोनों हाथों में मजबूत ..... रुप ऐसे उपाध्याय भगवान को नमस्कार हो।
५. गीतार्थ गुरु सच्चा उपदेश दे रहे हों फिर भी गुरु उन्मार्ग दर्शक हैं ऐसे वचन कहे उसे ..... समान श्रावक कहा है।
६. आत्मा की ..... को आवृत करे वह आयुष्य कर्म।
७. देव ..... की बजाय समवसरण की ओर जाने लगे।
८. मैं प्रतिदिन प्रभुजी की ..... पुजा करुंगा।
९. कर्म बंध के समय में मंदता तीव्रता आदि देखने मिलती है, जिसे ..... कहा जाता है।
१०. विश्व के सब जीवों द्वारा पूजा करने योग्य होते है यह प्रभुजी का ..... है।
११. हमारे जीवन की ..... मूल जयणा की न्यूनता में है।
१२. एक लाख योजन प्रमाणवाला जंबुद्वीप तिर्च्छालोक के ..... में है।
१३. इन्द्रभूति गौतम को ..... की पदवी अनेक बार प्राप्त हो चुकी थी।
१४. देव-पदवी मोक्ष आदि फल मिलेगा की नहीं ऐसा संदेह मन में धारण करना ..... नामक अतिचार जानना।
१५. आत्मा कम या ज्यादा ..... के समुह को आत्मा के साथ जोडती है उसे प्रदेश बंध कहते है।
१६. पंच परमेष्ठि से उत्पन्न हुई रक्षा करके की गई ..... निर्विघ्न बनती है।
१७. भाई समान श्रावक को साधु का विनय वैयावच्च करने में अनादर हो पर हृदय में ..... हो।
१८. उर्ध्वलोक में ..... दिव्य वैभवों की अनुभुति करने वाले देव रहते हैं।
१९. सुखी जीवन जीने के लिये ..... दोनों का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना जरुरी है।
२०. उत्पाद, व्यय, ध्रोव्य इस ..... छः द्रव्यों का जहाँ अवस्थान है वह लोक है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. स्कंध, देश, प्रदेश, परमाणु ये किसके भेद हैं ?
२. इन्द्रभुति गौतम वीर प्रभु को किसका घर मानते है ?
३. आत्मा के किसी न किसी गुण को ढंकने वाले उस कर्म के स्वभाव को क्या कहते हैं ?
४. देवकुरु और उत्तरकुरु ये कैसी भूमियाँ है ?
५. अन्य दर्शियों ने ग्रहण किया हो ऐसे जिन-बिंब क्या कहलाते हैं ?
६. इन्द्रभूति गौतम किनके सर्वज्ञ के अभिमान को सहन कर सके ऐसा नहीं था ?
७. चातुर्मासिक कृत्यों में किसकी आराधना का मार्गदर्शन किया गया है ?
८. श्री सर्वज्ञ भगवंत द्वारा प्ररुपित दयामय धर्म को सुधर्म के रुप में स्वीकारता हूं, यह किसके स्वीकार हेतु की प्रतिज्ञा है।
९. धातकी खंड द्वीप किसके वर्तुलाकार है ?
१०. कार्मण वर्गणा जब आत्मा के साथ जुडती है तब क्या बनती है ?
११. जिनकी आराधना कर्मनिर्जरा के लिये न होकर कर्म बंधन के लिये हो वह कौनसे श्रावक ?
१२. नमोअर्हदभ्यः स्वाहा यह पद शरीर की रक्षा करने में किले के उपर रहे हुए कैसे रुप है ?
१३. मेंढक काले सर्प को क्या करने तैयार हुआ है ?
१४. किसका चिंतन करने वाला उत्तम श्रावक कहलाता है ?
१५. जो साधु दूसरों के गुणों को सहन नहीं करे वो क्या कहलाते है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. धम्मकिच्चं २) पयत्थे ३) खादिर ४) जयं ५) गोआणि ६) समासओ ७) इयं ८) सव्वन्नुं ९) पइदी १०) सव्वति ११) विग्घं
१२. दृढं १३) संथुओ १४) विवागं १५) सुत्ता १६) चापि १७) ठि १८) भुंजंतो १९) वप्रो २०) शुभं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) तीर्थयात्रा	१) पताका	६) मिथ्यात्व	६) वंदन
२) विद्याधर	२) आत्मरक्षा	७) संयमीकरण	७) रात्रिभोजन
३) वासना	३) स्थिति	८) दर्पण	८) प्रवृति
४) आनंद	४) आभियोगिक	९) वज्र का पिंजर	९) भव्यत्माएं
५) सम्यग्ज्ञान	५) अविरति	१०) स्वभाव	१०) निर्बल

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. मध्यलोक चौरस रुचक से कितने योजन उपर है ?
२. इन्द्रभुति गौतम ने शरीर पर कितने स्थानो पर तिलक किये ?
३. कितने नमस्कार इस भूमितल पर वज्रमय शिलारुप हैं ?
४. सिद्धात्मा के आठ गुणों को आवरण करने वाली मुख्य प्रकृति के उत्तर भेद कितने हैं ?
५. व्रत श्रावक कितने व्रतों के धारक होते हैं ?
६. उर्ध्वलोक में सभी मिलाकर कुल कितने देवलोक हैं ?
७. अरिहंत परमात्मा कितने दोषों से रहित होते हैं ?
८. जंबुद्वीप के आजुबाजु वलयाकार लवण समुद्र कितने योजन प्रमाण वाला है ।
९. अभ्यास से कितने प्रकार के मिथ्यात्व बताये गये हैं ?
१०. कार्मण वर्गणा आत्मा के साथ कर्म स्वरुप चिपकती है तब कितनी चीजें निश्चित होती है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. साधु को अपने सगे स्नेहियों से भी ज्यादा माने उसे भाई समान श्रावक कहते हैं ।
२. समान प्रदेशों के बने स्कंध समुह को वर्गणा कहते हैं ।
३. इन्द्रभुति को उनके छोटे भाई वायुभुति ने कहा की एक तुच्छ स्थिति के वादी को जीतने आप क्यों प्रयास कर रहे हो ।
४. जहाँ के पुद्गलों के परिणाम हलके होते हैं अतः उसे अधोलोक कहते है ।
५. श्री जिनशासन के अन्य अधिष्ठायक देव-देवीयों का देवबुद्धि से पूजन करना वो लौकिक देवगत मिथ्यात्व कहलाता है ।
६. मोतीचूर के मोदक पंद्रह दिन तक अच्छे रहते हैं ।
७. इन पंच परमेष्ठी से उत्पन्न हुई रक्षा जो करता है, उसे भय,आधिव्याधि नहीं आती ।
८. तर्क शास्त्र में मुझे कोई हरा सके ऐसा नहीं है ।
९. यह मध्य लोक झालर के आकार का है ।
१०. विरती यह रथ है तो सम्यग् दर्शन उसका सारथी है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. विश्व के महापुरुषों ने विश्व की ऐसी विचित्रता के रहस्य को समझने का पुरुषार्थ किया है ।
२. ज्ञान, दर्शन, चारित्र के पालन करने योग्य आचारों का पालन न करे वो कुशील ।
३. निपुण ऐसे द्राविड विद्वान तो मेरे भय से शरमाकर मुंह नीचा करके घूम रहे हैं ।
४. उस कडवाहट में भी विविधता होती है, उसी प्रकार आत्मा के जुडते शुभ अशुभ रस में तरतमता होती है ।
५. प्रभु की वाणी स्वरुप सूत्र से एवं गुरुपरंपरा से प्राप्त ज्ञान द्वारा रचना हुई है ।
६. उसकी छोटी भी आराधना कर्म निर्जरा एवं पुण्य के लिये होती है ।
७. सर्व मंगलो को रखने के लिये वह अंगारो की खाई रुप है ।
८. सर्व धर्म के कृत्य सम्यक्त्व द्वारा आत्मशुद्धि किये बिना एक भी धर्म के कृत्य शोभा नहीं देते ।
९. श्रावक कुल में जन्म लेने से श्रावक जन्म योग्य करने योग्य कुलाचार की बात जन्मकृत्य में बताई है ।
१०. मैं अभी वहाँ जाकर उसकी बोलती बंद कर दूंगा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व समझाओ । २) मोदक के दृष्टांत से स्थिती बंध ३) लोक और अलोक
४. भावश्रावक के प्रकार उसमें उत्तर गुण श्रावक का विवेचन ५) वीर प्रभु को केवलज्ञान दर्शन और विहार

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,

मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com